ग्रहलाघवम्

शास्त्री-III

चन्द्रग्रहणाधिकारः

Date 02.11.20
Page 1

रविचन्द्रभूभाबिम्बसाधन प्रकार:—

गतिर्द्विघ्नीशाप्ताङ्गुलमुखतनुः स्यात्खरुचो-
विधोर्भुक्तिर्वेदाद्रिभिरपहृता बिम्बमुदितम् ।
नृपाश्वोना चान्द्री गतिरपहृता लोचनकरै-
रदाढ्या भूभा स्याद्दिनगतिनगांशेन रहिता ॥

अन्वयः — खरुचः गतिः द्विघ्नी ईशाप्ता अङ्गुलमुखतनुः स्यात् । विधोः भुक्तिः वेदाद्रिभिः अपहृता बिम्बम् उदितम् । चान्द्री गतिः नृपाश्वोना लोचनकरैः अपहृता रदाढ्या दिनगतिनगांशेन रहिता भूभा स्यात् ।

तत्र — खरुचः सूर्यस्य, गतिः द्विघ्नी द्विसङ्ख्यया गुणिता, ईशाप्ता एकादशसङ्ख्या विभक्ता, अङ्गुलमुखतनुः अङ्गुलादिसूर्यबिम्बं स्यात् । विधोः चन्द्रस्य, भुक्तिः स्पष्टगतिः, वेदाद्रिभिः चतुःसप्तत्या, अपहृता विभक्ता, सती बिम्बम् अङ्गुलादि चन्द्रबिम्बम् उदितम्भवति । चान्द्री चन्द्रमसः सम्बन्धिनी, गति स्पष्टगतिः, नृपाश्वोना षोडशोत्तरसप्तशतहीना, ततः लोचनकरैः द्वाविंशतिभिः विभक्ता, रदाढ्या द्वात्रिंशद्युक्ता, दिनगतिनगांशेन सूर्यस्पष्टगतेः सप्तमांशेन, रहिता हीना, भूभा अङ्गुलादिभूभाबिम्बं स्यात्, इदमेव राहुबिम्बनाम्ना प्रथते ।

भावार्थः— सूर्य की स्पष्टगति को २ से गुणा करें। जो गुणनफल प्राप्त हो, उसमें ११ का भाग दें, जो अंगुलादि लब्धि प्राप्त हो वह सूर्यबिम्ब होता है। चन्द्रमा की स्पष्टगति में ७४ का भाग दें। जो लब्धि प्राप्त हो वह अंगुलादि चन्द्रबिम्ब होता है।

चन्द्रमा की स्पष्टगति में से ७१६ कला घटाएं। जो शेष रहे उसमें २२ का भाग दें। जो लब्धि मिले, उसमें ३२ जोड़ दें। योगफल में से सूर्य की स्पष्टगति के ७ वें अंश को घटाने से जो शेष रहे वह अंगुलादि भूभाबिम्ब होता है। इसी को राहु-बिम्ब कहते हैं।

शास्त्री-III

प्रकारान्तरेण तदेव विवेचयति —

व्यसुशरगतीववंशो दिग्युग्भवेद् वपुरुष्णगो-
रथ सितरुचो बिम्बं भुक्तिर्युगाम्यलभाजिता ।
तदपि हिमगोर्बिम्बं त्रिघ्नं निजेशलवान्वितं
विवसु भवति क्ष्माभाबिम्बं किलाङ्गुलपूर्वकम् ॥

अन्वयः — व्यसुशरगतीववंशः दिग्युक् उष्णगोः वपुः भवेत् । अथ सितरुचः भुक्तिः युगाम्यलभाजिता बिम्बं भवेत् । तदपि हिमगोः बिम्बं त्रिघ्नं निजेशलवान्वितं तत् विवसु अङ्गुलपूर्वकं क्ष्माभाबिम्बं भवति किल ।

टीका — व्यसुशरगतीववंशः; विगताः पञ्चपञ्चाशत् यस्याः सा असौ गतिः च, दिग्युक् दशाभिर्युक्तः, उष्णगोः सूर्यस्य, वपुः शरीरं बिम्बं, भवेत् । अथ अनन्तरं, सितरुचः चन्द्रमसः, भुक्तिः गतिः, युगाम्यलभाजिता चतुःसप्ततिभक्ता, बिम्बं भवेत् । तदपि हिमगोः चन्द्रमसः, बिम्बं वपुः, त्रिघ्नं त्रिगुणितं निजेशलवान्वितं निजैकादशांशयुतं, तत् विवसु अष्टसङ्ख्याविरहितं, कर्तव्यं तदा अङ्गुलपूर्वकम् अङ्गुलादिकं क्ष्माभाबिम्बं भूछायाबिम्बं भवति किलेति प्रसिद्धम् ।

भावार्थः — सूर्य की कलादि गति में से ५५ को घटाकर जो शेष बचा उसके पाँचवें अंश में १० जोड़ने से अंगुलादि सूर्यबिम्ब होगा और चन्द्रमा की गति की कलाओं में ७४ का भाग देने से प्राप्त लब्धि अंगुलादि चन्द्रबिम्ब होगा । इसी चन्द्रबिम्ब को ३ से गुणा करके प्राप्त गुणनफल में अपना ११ वाँ अंश जोड़ा फिर प्राप्त योगफल में से ८ घटाने पर अंगुलादि भूभाबिम्ब होता है ।

छाद्यच्छादककथनं ग्राससाधनञ्च —

छादयत्यर्कमिन्दुर्विधुं भूमिभा छादकच्छाद्यमानैक्यखण्डं कुरु।
तच्छरोनं भवेच्छन्नमेतद्यदा ग्राह्यहीनावशिष्टं तु खच्छन्नकम्॥

अन्वयः— इन्दुः अर्कं छादयति, भूमिभा विधुं छादकच्छाद्यमानैक्यखण्डं कुरु। तत् शरोनं छन्नं भवेत्। यदा तु एतत् ग्राह्यहीनावशिष्टं खच्छन्नकं भवेत्।

तारा— इन्दुः चन्द्रः, अर्कं सूर्यं, छादयति आवृणोति, एवञ्च भूमिभा भूच्छाया, विधुं चन्द्रमसं, छादयति, हे गणक! छादकच्छाद्यमानैक्यखण्डं पूर्वोक्तच्छादकच्छाद्ययोः बिम्बयोगार्धं शरेण हीनं, कुरु विधेहि। तत् शरोनं शरेण हीनं, छन्नं ग्रासमानं, भवेत्। यदा तु एतत् ग्रासमानं, ग्राह्यबिम्बाधिकं भवति तदा ग्राह्यहीनावशिष्टं छाद्यबिम्बहीनादवशिष्टं भवति तदा, खच्छन्नकं खग्रासः, भवेत्।

भावार्थः— सूर्यग्रहण के समय चन्द्रमा सूर्य को आच्छादित किये रहता है। इसलिये सूर्यग्रहण में चन्द्रमा को छादक और सूर्य को छाद्य कहते हैं। चन्द्रग्रहण के समय भूभा (पृथ्वी की छाया) चन्द्रमा को आच्छादित कर देती है। अतः चन्द्रग्रहण में भूभा को छादक और चन्द्रमा को छाद्य कहते हैं।

छाद्य-छादक बिम्बों को जोड़ करके २ का भाग दें। जो लब्धि हो, वह मानैक्यखण्ड होता है। इस में से शर को घटाने पर जो शेष रहे वह ग्रासबिम्ब होता है। यदि मानैक्यखण्ड की तुलना में शर अधिक हो तो ग्रहण नहीं होता। खाद्य के बिम्ब में से ग्रासबिम्ब को घटाने से जो शेष रहे, वह बिम्ब होता है। यदि छाद्यबिम्ब की अपेक्षा ग्रासबिम्ब अधिक हो तो ग्रासबिम्ब में से छाद्यबिम्ब को घटा दें। शेष संख्या खग्रास बिम्ब होगी है।

वक्तव्य— जिस प्रकार मेघमंडल सूर्य बिम्ब को आच्छादित कर देता है, उसी प्रकार (अमावस्या के अन्त में) सूर्यमण्डल

P.T.O

के नीचे स्थित चन्द्रमा अपनी शीघ्रगति के कारण पश्चिम भाग से आकर सूर्यबिम्ब को ढ़क देता है। मानैक्यखण्ड से शर के कम होने पर चन्द्रमा मेघ के समान हमारी दृष्टियों के लिए आवरण बन जाता है। इसलिये चन्द्रमा को छादक और सूर्य को छाद्य कहा गया है, यह सूर्यग्रहण की विवेचना हुई।

चन्द्रग्रहण में भूमि की छाया विस्तृत होने के कारण चन्द्रकक्षा को पार करके बाहर चली जाती है। वह सूर्य के विपरीत भाग (षड्भान्तरित) में होता है। अतः पूर्णिमा के दिन षड्भान्तरित चन्द्र मानैक्यखण्ड से शर के कम होने पर भूमि की छाया से ढक जाता है इसीलिये चन्द्रग्रहण में भूमि की छाया का छादकत्व सिद्ध होता है। इसी भूभाबिम्ब को राहुबिम्ब भी कहते हैं

डॉ० सुदिष्ट कुमार
सहा० प्राचार्य (ज्योतिष)
रा०उ०सं०महा०वि० सुखसेना
पूर्णियाँ